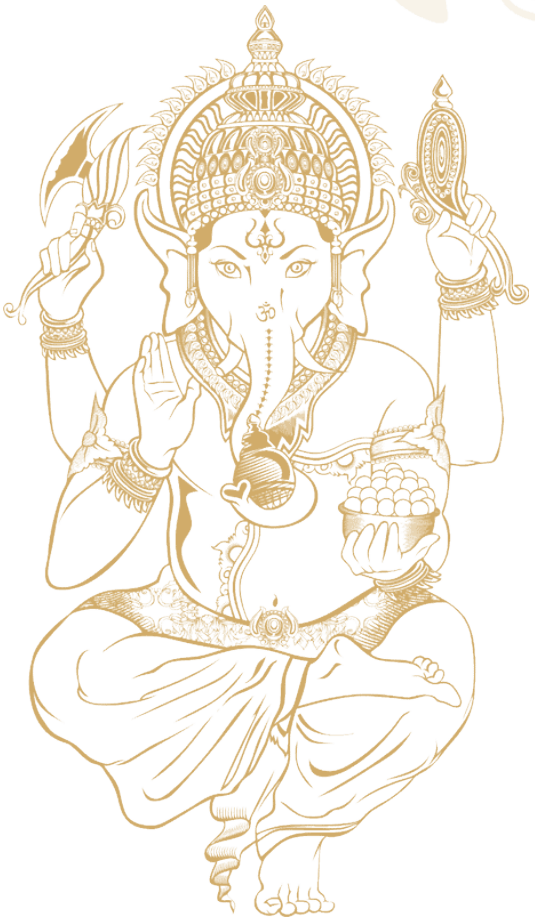

D

Puja

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120884502

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
24-25/06/2000 :	जन्म तिथि	: 29/07/2002
शनि-रविवार :	दिन	: सोमवार
घंटे 03:00:00 :	जन्म समय	: 08:00:00 घंटे
घटी 53:58:14 :	जन्म समय(घटी)	: 05:48:24 घटी
India :	देश	: India
Delhi :	स्थान	: Delhi
28:39:00 उत्तर :	अक्षांश	: 28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व :	रेखांश	: 77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08 :	स्थानिक संस्कार	: -00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
05:24:42 :	सूर्योदय	: 05:40:38
19:22:32 :	सूर्यास्त	: 19:14:05
23:51:34 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:53:19

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शनि 12वर्ष 3मा 11दि	02:33:56	वृष	लग्न	सिंह	10:56:17	शनि 15वर्ष 10मा 6दि
बुध	09:47:07	मिथु	सूर्य	कर्क	11:55:53	बुध
05/10/2012	08:02:55	मीन	चंद्र	मीन	05:32:38	04/06/2018
05/10/2029	11:44:31	मिथु	मंगल	कर्क	16:01:24	04/06/2035
बुध 04/03/2015	26:00:46	मिथु व	बुध	कर्क	20:45:05	बुध 31/10/2020
केतु 29/02/2016	04:59:33	वृष	गुरु	कर्क	05:18:29	केतु 28/10/2021
शुक्र 30/12/2018	13:28:27	मिथु	शुक्र	सिंह	26:15:35	शुक्र 28/08/2024
सूर्य 05/11/2019	02:07:10	वृष	शनि	मिथु	00:39:56	सूर्य 04/07/2025
चन्द्र 06/04/2021	00:55:11	कर्क व	राहु व	वृष	22:40:24	चन्द्र 04/12/2026
मंगल 03/04/2022	00:55:11	मक व	केतु व	वृश्चि	22:40:24	मंगल 01/12/2027
राहु 20/10/2024	26:36:00	मक व	हर्ष व	कुंभ	03:48:48	राहु 19/06/2030
गुरु 26/01/2027	12:09:20	मक व	नेप व	मक	15:48:06	गुरु 24/09/2032
शनि 05/10/2029	17:04:30	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	21:13:13	शनि 04/06/2035

लग्न-चलित

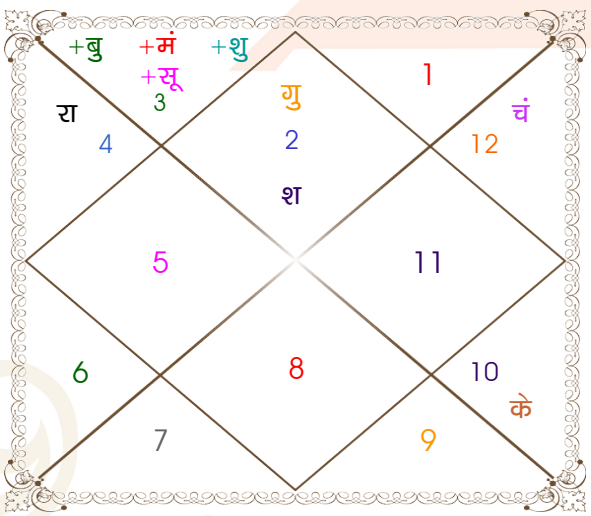

लग्न-चलित

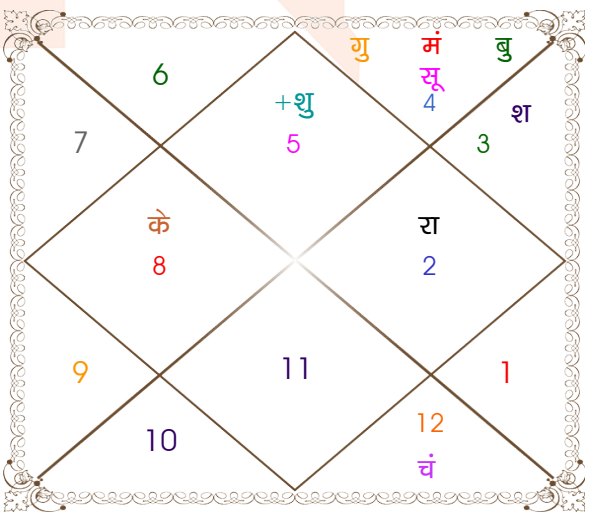

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गौ	गौ	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

क का वर्ग सर्प है तथा च्नरं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क और च्नरं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

क मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

च्नरं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल च्नरं कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल च्नरं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु च्नरं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन

हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु क कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

क तथा च्नरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।